अध्याय 1

प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- प्रागैतिहासिक काल का उद्भव और विकास कैसे हुआ।
- इस काल के मानव आपस में किस प्रकार से सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्रियाकलाप करते थे।
- इस काल के लोगों का अपनी आजीविका और रहन-सहन में किस प्रकार बदलाव आया।

भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ
(Prehistoric Cultures in India)

मानव के विकास का वर्तमान स्वरूप उसके क्रमिक विकास का परिणाम है। आरंभ में मानव ने हजारों वर्षों तक आखेटक तथा खाद्य संग्राहक के रूप में अपना जीवन व्यतीत किया। कालान्तर में वह कृषि, पशुपालन एवं स्थायी निवास करने लगा तथा खानाबदोश जीवन से मुक्त हुआ। भारत में मानव के विकास का अद्यतन साक्ष्य शिवालिक पहाड़ियों के अभिनूतन युगीन निक्षेपों से मिलते हैं। मानव के जिस रूप के साक्ष्य यहाँ प्राप्त हुए हैं, उसे रामापिथेकस के नाम से जाना जाता है। परंतु पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में आदि मानव का कोई जीवाश्म (फॉसिल) नहीं मिला है। भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य नर्मदा घाटी के हथनौरा नामक स्थान से मिला है, जो मध्यपाषाण काल से संबंधित स्थल है। प्रागैतिहासिक काल में मानव के विभिन्न क्रिया कलापों के अध्ययन को ही प्रागैतिहासिक संस्कृति के रूप में जाना जाता है।

इतिहासकारों ने लेखन प्रणाली के आधार पर प्राचीन भारतीय इतिहास को तीन भागों प्रागैतिहासिक काल, आद्य ऐतिहासिक काल तथा ऐतिहासिक काल में बाँटा है—

प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Period)

इस काल की जानकारी का सम्पूर्ण अध्ययन पुरातात्विक स्रोतों पर निर्भर है। इस काल मे मानव लेखन कला से अपरिचित था, इसलिए इस काल को 'प्रागैतिहासिक काल' कहते हैं। भारतीय प्रागैतिहास को उद्घाटित करने का श्रेय प्राइमरोज नामक एक ब्रिटिश को जाता है, जिसने 1842 ई. में कर्नाटक के रायचूर जिले के लिंगसुगुर नामक स्थान में प्रागैतिहासिक औजारों की खोज की। 1863 ई. में राबर्ट ब्रूसफूट ने पल्लवरम् (तमिलनाडु) से हैंडएक्स की खोज की।

आद्य ऐतिहासिक काल (Epochal Period)

इस काल में मानव लिपि से तो परिचित था, परंतु उस लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है, इसलिए इसे 'आद्य-ऐतिहासिक काल' कहा जाता है। हड़प्पा सभ्यता भारत के आद्य ऐतिहासक काल से संबंधित है।

ऐतिहासिक काल (Historical Period)

इस काल में मानव लिपि से परिचित था और वह लिपि पढ़ी भी जा चुकी है, यह 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है। यह काल ऋग्वेद काल से प्रारंभ होता है जिसका समय 1500 ई.पू. माना गया है।

600 ई.पू. के पश्चात् का काल ऐतिहासिक कहलाता है। इसका कारण यह है कि भारत में प्राचीनतम लिखित सामग्री अशोक के अभिलेख हैं जिनका समय 300 ई.पू. है। अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त यूनानी, खरोष्ठी, अरामेइक और ब्राह्मी भाषाओं के विकास में 300 वर्ष और लगे होंगे ऐसा भाषाविदों का मत है इसके अतिरिक्त गौतम बुद्ध और महावीर जैन को भी ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखा जाता है।

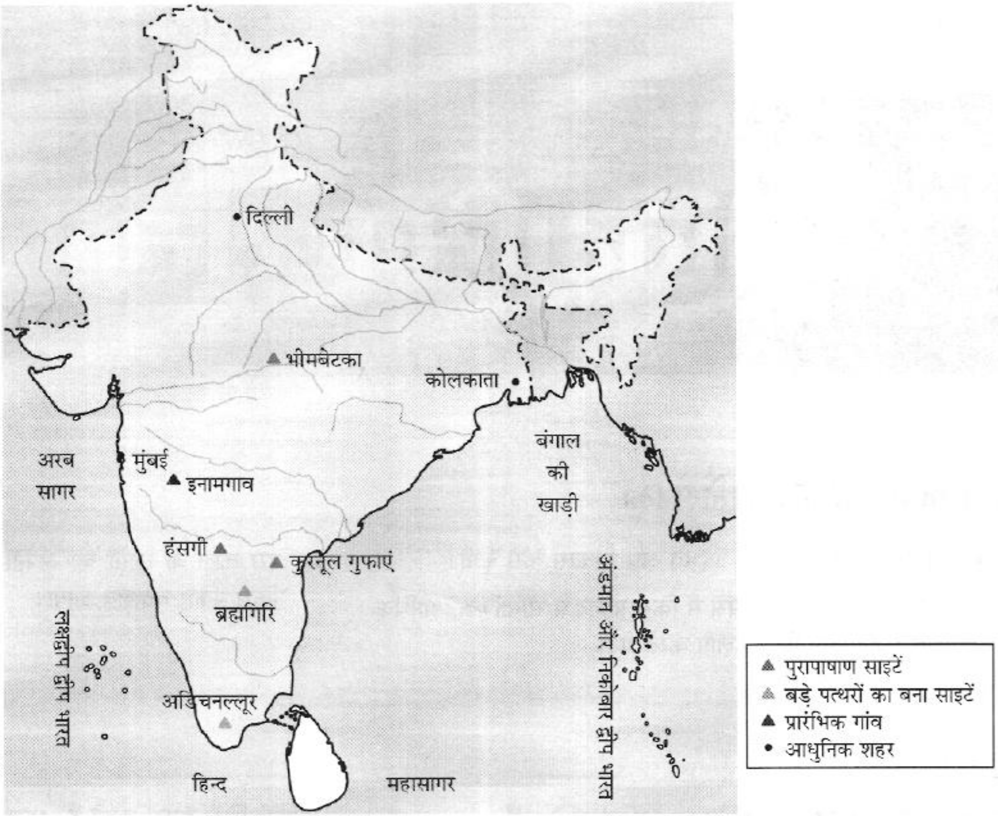
दिल्ली
भीमबेटका
कोलकाता
अरब सागर
मुंबई
इनामगाव
बंगाल की खाड़ी
हंसगी
कुरनूल गुफाएं
ब्रह्मगिरि
लक्षद्वीप द्वीप भारत
अडिचनल्लूर
अंडमान और निकोबार द्वीप भारत
हिन्द
महासागर
▲ पुरापाषाण साइटें
▲ बड़े पत्थरों का बना साइटें
▲ प्रारंभिक गांव
• आधुनिक शहर

चित्र 1.1: भारत में प्रस्तर युग के महत्त्वपूर्ण स्थल

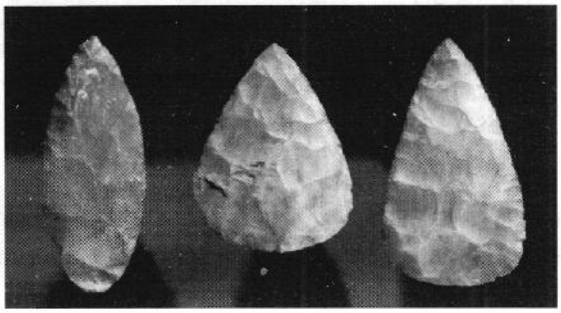

चित्र 1.2: पेलियोलिथिक युग के पत्थर के औज़ार

पाषाण काल (Stone Age)

भारतीय पाषाण युग को मानव द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पत्थर के औज़ारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर तीन अवस्थाओं में विभाजित किया जाता है—पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल और नवपाषाण काल।

भारत में पाषाणकालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरूआत 1863 ई. में जियोलॉजिकल सर्वे से संबंधित अधिकारी रॉबर्ट ब्रूसफूट ने की, उसे मद्रास के समीप पल्लवरम से एक पाषाण उपकरण प्राप्त हुआ। अन्ततः मार्टिमर व्हीलर के प्रयासों से भारत के समग्र प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक अनुक्रम का ज्ञान हुआ। ए. कनिंघम को 'प्रागैतिहासिक पुरातत्व का जनक' कहा जाता है

पुरापाषाण काल (25 लाख ई.पू. से 10 हजार ई.पू.) (Palaeolithic Age)

तकनीकी विकास तथा जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर पुरापाषाण काल को निम्न, मध्य एवं उच्च पुरापाषाण काल में विभाजित किया गया है।

निम्न पुरापाषाण काल (25 लाख, ई.पू. से 9 लाख ई.पू.)

यह पाषाण युग का प्रारंभिक चरण है। इसे 'निम्न पुरापाषाण काल' के रूप में जाना जाता है। इस समय मनुष्य पत्थरों (क्वार्ट्जाइट) से निर्मित हथियारों (हस्तकुठार, विदारणी, खण्डक) का उपयोग करता था। जिन्हें कोर (Core) उपकरण कहा गया।

निम्न पुरापाषाण स्थल भारतीय महाद्वीप के लगभग सभी क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं, जिनमें असम की घाटी, सोहन घाटी, नर्मदा घाटी एवं बेलनघाटी प्रमुख हैं। महाराष्ट्र के बोरी तथा तमिलनाडु पल्लवरम एवं अतिरमपक्कम नामक स्थलों से इस काल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। काल से प्राप्त उपकरणों के आधार पर भारत में दो भिन्न संस्कृतियों की पहचान की गई है—1. चॉपर-चॉपिंग पेबुल (Pebble) संस्कृति (सोहन संस्कृति) तथा 2. हैंड एक्स संस्कृति (मद्रासियन संस्कृति)।

मध्य पुरापाषाण काल (9 लाख ई.पू. से 40 हजार ई.पू.)

मध्य पुरापाषाण काल में शल्क उपकरणों की प्रधानता बढ़ गई तथा कच्चे माल के रूप में क्वार्ट्जाइट के स्थान पर चर्ट और जैस्पर प्रमुख हो गया। इस काल में फलकों की सहायता से बेधनी, छेदनी एवं खुरचनी जैसे उपकरण बनाए गए।

फलकों की अधिकता के कारण ही मध्य पुरापाषाण काल को फलक संस्कृति भी कहा जाता है। एच डी सांकलिया ने नेवासा (गोदावरी नदी के तट पर) को प्रारूप स्थल घोषित किया है।

उच्च पुरापाषाण काल (40 हजार ई.पू. से 10 हजार ई.पू.)

उच्च पुरापाषाण काल आधुनिक मानव अर्थात् होमोसेपियन्स के अस्तित्व का युग था। इस काल में मानव उपकरणों के निर्माण में हड्डी, हाथी दाँत एवं सींगों का प्रयोग करने लगा था। नए चकमक उद्योग की स्थापना तथा होमोसेपियन्स का उदय इस काल की दो महत्वपूर्ण घटनाएं हैं।

उच्च पुरापाषाण काल के उपकरणों में तक्षणी एवं खुरचनी के उपरोक्त अस्थि के उपकरण महत्वपूर्ण थे। मानव रहने के लिए शैलाश्रयों का प्रयोग करने लगा। इस काल मे नक्काशी और चित्रकारी दोनों रूपों में कला का विकास हुआ।

मध्यपाषाण काल (10 हजार ई.पू. से 7 हजार ई.पू.) (Mesolithic Age)

हिम युग के अन्त के पश्चात् मध्यपाषाण काल का प्रारंभ माना जाता है। भारत में मध्यपाषाण काल के विषय में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में हुई जब सी एल कार्लाइल ने विंध्य क्षेत्र मे लघु पाषाण उपकरण खोज निकाले। इस काल के औजार छोटे पत्थरों से बने हुए हैं, जिन्हें माइक्रोलिथिक या सूक्ष्म पाषाण कहा गया है।

मध्यपाषाण युगीन औजार बनाने की तकनीक को फ्रलूटिंग कहा जाता है। इस काल के कुछ सूक्ष्म औजारों का आकार ज्यामितीय है, जिसमें ब्लेड, इस काल में सैटेलाइट टूल्स (फेंककर मारे जाने वाले औजार) का प्रयोग होने लगा था। नव चन्द्राकार तथा समलम्ब औजार प्रमुख हैं।

मध्यपाषाण काल के लोग शिकार, मछली पकड़ने तथा खाद्य-संग्रहण पर निर्भर करते थे। इस काल में बाघोर (राजस्थान) तथा आदमगढ़ भीमबेटका (मध्य प्रदेश) से पशुपालन का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त होता है। इसी काल में मानव ने सर्वप्रथम कुत्ते को पालतू पशु बनाया था। यह पुरापाषाण काल तथा नवपाषाण काल के बीच संक्रमण का काल था।

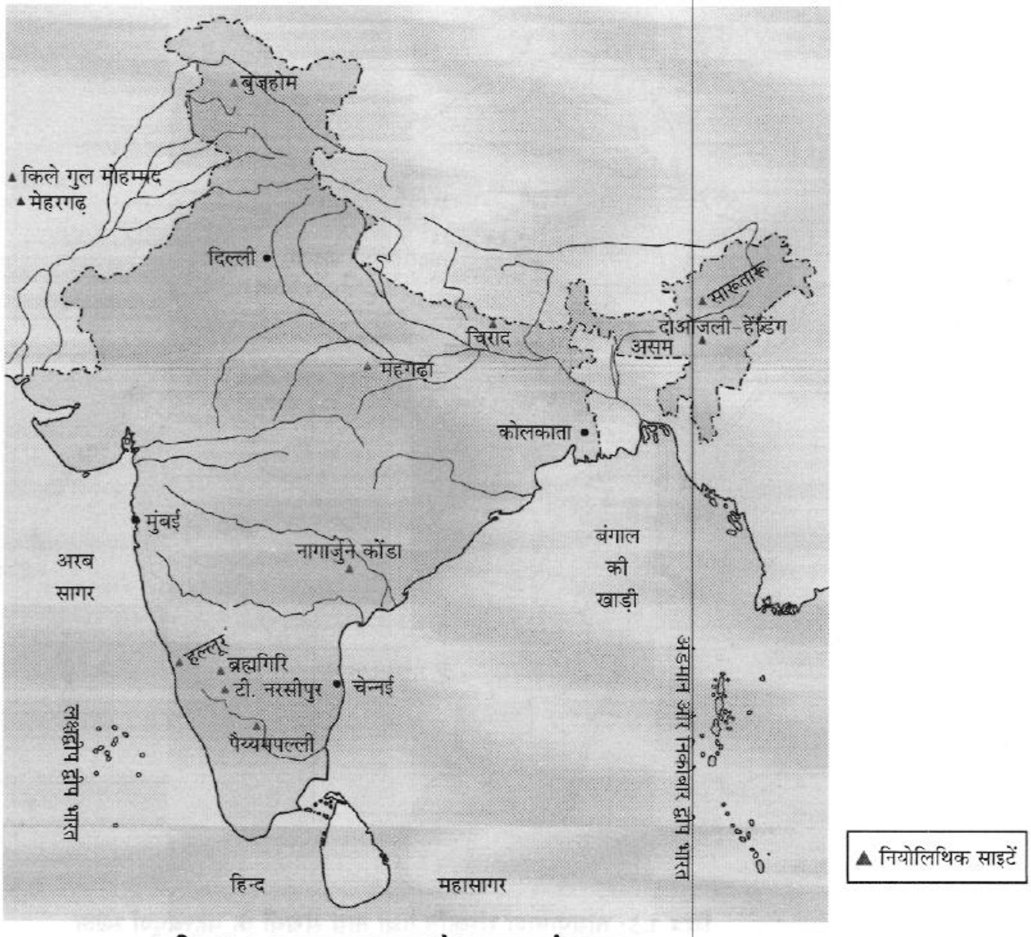
बुर्जहोम
किले गुल मोहम्मद
मेहरगढ़
दिल्ली
सारुतारू
दाओजली-हेडिंग
असम
चिरांद
महगढ़ा
कोलकाता
मुंबई
नागार्जुनकोंडा
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
हल्लूर
ब्रह्मगिरि
टी. नरसीपुर
चेन्नई
पैय्यमपल्ली
लक्षद्वीप भारत
अंडमान और निकोबार द्वीप भारत
हिन्द
महासागर
▲ नियोलिथिक साइटें

चित्र 1.3: नवपाषाण काल के महत्त्वपूर्ण स्थल

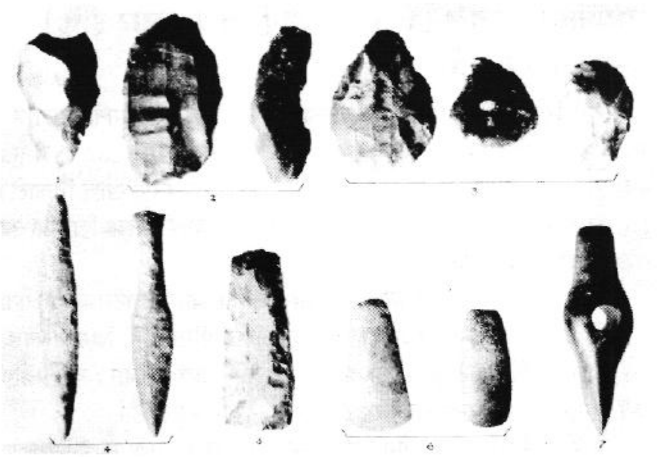

चित्र 1.4: हड्डी के औज़ार

स्थायी निवास का प्रारंभिक साक्ष्य सराय नाहर राय एवं महदहा से स्तंभ गर्त के रूप में मिलता है। सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश) से बड़ी मात्रा में हड्डी एवं सींग निर्मित उपकरण प्राप्त हुए हैं तथा महदहा से हड्डी का वाणाग्र प्राप्त हुआ है।

मध्यपाषाण काल के मनुष्यों ने अनुष्ठान के साथ शवों को दफनाने की प्रथा प्रारंभ की। मध्य भारत की विशेषता दर्शाने वाली लेखनियों से मध्यपाषाण कालीन शवों को अनुष्ठान के साथ दफनाने का साक्ष्य मिला है।

नवपाषाण काल (7 हजार ई.पू. से 2 हजार ई.पू.) (Neolithic Age)

नवपाषाण या नियोलिथिक शब्द का प्रयोग सबसे पहले सर जॉन लुबाक ने 1865 ई. में किया था। पुरातत्वविद् मिल्स बुरकिट के अनुसार—पशुओं को पालतू बनाना, कृषि व्यवहार का प्रथम प्रयोग, घिसे तथा पॉलिशदार पत्थर के औजार एवं मृद्भाण्डों का निर्माण नवपाषाण काल की प्रमुख विशेषता है।

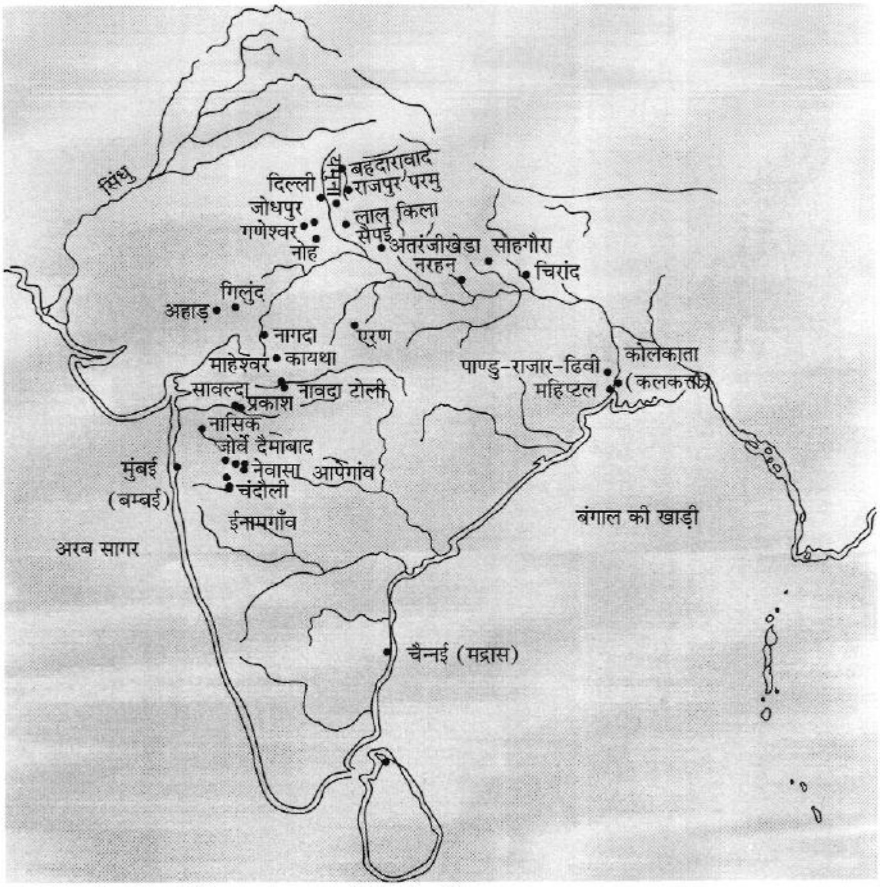
सिंधु
बहदराबाद
दिल्ली
राजपुर परसु
जोधपुर
लाल किला
गणेश्वर
सैपई
नोह
अतरंजीखेडा
सोहगौरा
नरहन
चिरांद
गिलुंद
अहाड़
नागदा
एरण
माहेश्वर
कायथा
पाण्डु-राजार-ढिबी
कोलकाता
(कलकत्ता)
महिष्टल
सावल्दा
नावदा टोली
प्रकाश
नासिक
जोर्वे दैमाबाद
मुंबई
(बम्बई)
नेवासा
आपेगांव
चंदौली
ईनामगाँव
बंगाल की खाड़ी
अरब सागर
चैन्नई (मद्रास)

चित्र 1.5: ताम्रपाषाण संस्कृति तथा ताम्र संचयों के महत्त्वपूर्ण स्थल

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में अवस्थित मेहरगढ़ तथा भारत के कश्मीर में स्थित बुर्जहोम एवं गुफ्कराल महत्वपूर्ण नवपाषाण कालीन स्थल हैं। बुर्जहोम में गर्त निवास का साक्ष्य मिलता है, जहाँ कब्रों में पालतू कुत्ते भी मालिकों के शवों के साथ दफनाए जाते थे।

चिरांद (बिहार) से हड्डियों के उपकरण पाए गए हैं, जो मुख्य रूप से हिरण के सींगों के हैं। मृदभाण्ड निर्माण का प्रारंभ नवपाषाण से हुआ। मृद्भाण्ड का प्राचीनतम साक्ष्य चोपानीमाण्डो से प्राप्त हुआ है।

कर्नाटक में संगनकल्लू (मैसूर) तथा पिकलीहल से 'राख के टीले' प्राप्त हुए हैं। महदहा (बेलन घाटी) से गौशाला के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश) से वन्य एवं कृषिजन्य दोनों प्रकार के चावल के साक्ष्य मिलते हैं। यह धान की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य है।

नोट—वर्ष 2004 में उत्तरप्रदेश के संतकबीर नगर जिले के लहुरादेव में हुई खुदाई से चाक्ले के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं

प्राचीनतम स्थायी जीवन (बस्ती) के साक्ष्य मेहरगढ़ से मिले हैं।

ताम्रपाषाण काल (2000 ई.पू. से 500 ई.पू.) (Copper Stone Age)

नवपाषाण युग का अंत होते-होते धातुओं का इस्तेमाल शुरू हो गया था। मानव ने सर्वप्रथम ताँबा धातु का प्रयोग किया। जिस काल में लोगों ने पत्थर के साथ-साथ ताँबे के हथियारों का प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया, उसे ताम्रपाषाण युग (2000 ई.पू. से 500 ई.पू.) कहा गया। ताम्रपाषाण काल के लोग मुख्यत: ग्रामीण समुदाय के थे। भारत में ताम्र पाषाण अवस्था के मुख्य क्षेत्र दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (अहाड़ एवं गिलुण्द), पश्चिमी मध्य प्रदेश (मालवा, कायथा और एरण), पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिण-पूर्वी भारत हैं।

मालवा संस्कृति की एक विलक्षणता है—मालवा मृदभाण्ड, जो ताम्रपाषाण मृद्भाण्डों में उत्कृष्टतम माना गया है। मालवा संस्कृति के स्थल हैं—अहमदनगर के जोरवे, नेवासा एवं दैमाबाद, पुणे में चन्दौली, सोनेगाँव एवं इनामगाँव।

जोरवे संस्कृति ग्रामीण थी, फिर भी इसकी कई बस्तियाँ, जैसे—दैमाबाद और इनामगाँव में नगरीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई थी। दैमाबाद से ताँबे का रथ चलाता हुआ, मनुष्य, साँड, गैण्डे तथा हाथी की आकृतियाँ प्राप्त हुई हैं। इनामगाँव एक बड़ी बस्ती है, जो किलाबन्द है तथा खाई से घिरी हुई है। ताम्रपाषाणिक स्थलों में सबसे बड़ा उत्खनित ग्रामीण स्थल एच. डी. आकलिया द्वारा उत्खनित नवदाटोली है, जहाँ से सर्वाधिक फसल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

अहाड़ संस्कृति का प्राचीन नाम ताम्बावती अर्थात् ताँबा वाली जगह है। गिलुण्द इस संस्कृति का स्थानीय केन्द्र माना जाता है। अहाड़ के लोग पत्थर के बने घरों में रहते थे। यहाँ से ताँबे की बनी कुल्हाड़ियाँ, चूड़ियाँ तथा कई तरह की चादरें प्राप्त हुई हैं।

कायथा के मृद्भाण्डों पर प्राक् हड़प्पन, हड़प्पन और हड़प्पोत्तर संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। कायथा से स्टेटाइट और कॉर्नेलियन जैसे कीमती पत्थरों की गोलियों के हार पात्रों में जमे पाए गए हैं। गैरिक मृद्भाण्ड संस्कृति भी एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति है। इसका काल 2000 से 1500 ई.पू. निर्धारित किया गया है।

तालिका 1.1: प्रमुख ताम्रपाषाणिक संस्कृति

संस्कृति	काल
1. अहाड़ संस्कृति	2100 ई.पू. से 1800 ई.पू.
2. कायथा संस्कृति	2100 ई.पू. से 1800 ई.पू.
3. सावाल्दा संस्कृति	2100 ई.पू. से 1800 ई.पू.
4. प्रभास संस्कृति	1800 ई.पू. से 1200 ई.पू.
5. मालवा संस्कृति	1700 ई.पू. से 1200 ई.पू.
6. रंगपुर संस्कृति	1500 ई.पू. से 1200 ई.पू.
7. जोरवे संस्कृति	1400 ई.पू. से 700 ई. पू.

महापाषाण काल (Megalithic Period)

ऐसे बड़े पत्थर या शिला जिनमें मानव को दफनाया जाता था महापाषाण कहा जाता था। और जिस काल में समाधियों में ऐसे पत्थरों कर प्रयोग किया जाता था, उसे महापाषाण काल कहा जाता है। ये समाधियां विभिन्न प्रकार की थीं यथा—1. डोलमेन 2. मेनहिरि 3. केयर्न सर्किल 4. अम्ब्रैलास्टोन

महापाषाण काल से सम्बद्ध मानव साधारणत: पहाड़ों के ढलान पर रहता था। दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्वी भारत तथा कश्मीर में यह प्रथा प्रचलित थी। यहाँ पर कब्रों में लोहे के औजार, घोड़े के कंकाल तथा पत्थर एवं सोने के गहने भी प्राप्त हुए हैं। यहाँ आंशिक शवाधान की पद्धति भी प्रचलित थी। जिसके तहत शवों को जंगली जानवरों के खाने के लिए छोड़ दिया जाता था। ब्रह्मगिरि, आदिनचल्लूर, मास्की पुदुको, चिंगलपुट, गुण्टूर, नागार्जुनीकोंडा आदि इसके प्रमुख शवाधान केन्द्र हैं। महापाषाणकालीन लोग धान के अतिरिक्त रागी की खेती भी करते थे। इतिहासकारों ने महापाषाण काल का निर्धारण 1000 ई.पू. से लेकर प्रथम शताब्दी ई.पू. के बीच किया है। दक्षिण भारत में लौह काल महापाषाण काल के समकालीन था।

अध्याय सार संग्रह

- जिस काल के इतिहास का लिखित विवरण नहीं मिलता है, वह काल प्रागैतिहासिक काल कहलाता है, जैसे—पाषाण कालीन इतिहास।
- जिस काल के लिखित विवरण तो मिलते हैं, लेकिन उसका अर्थ स्पष्ट नहीं हो सका है, वह काल आद्य ऐतिहासिक काल कहलाता है, जैसे-सिन्धु सभ्यता।
- जिस काल के लिखित साक्ष्य का स्पष्ट विवरण प्राप्त होता है वह काल ऐतिहासिक काल कहलाता है, जैसे—महाजनपदों के बाद का काल (छठी सदी ई.पू. से)।
- प्रागैतिहासिक काल को सामान्यत: तीन भागों में बांटा गया है—पुरापाषाण काल, मध्य पाषाणकाल तथा नव या उत्तर पुरापाषाण काल।
- सर्वप्रथम पाषाणकालीन सभ्यता तथा संस्कृति का अन्वेषण ब्रूस फुट महोदय ने 1863 ई. में किया।
- पुरापाषाण युग के स्थल वर्तमान पाकिस्तान की सोहन घाटी एवं महाराष्ट्र में पाए गए हैं।
- लोहदा नाला (बेलन घाटी, उत्तर प्रदेश) से पशु की हड्डी से बनी मूर्ति प्राप्त हुई है। जो मातृदेवी की है।
- यहीं से मानव कंकाल के प्रमाण मिले हैं। हथनौरा (मध्य प्रदेश) से हाथी का सबसे पुराना जीवाश्म मिला है।
- मध्य पुरापाषाण युग के औजार मुख्यत: शल्क के थे। अत: इस संस्कृति को फलक संस्कृति की संज्ञा दी गई है।
- यह काल नियन्डरथल मानव का था। मोस्तारी संस्कृति इसी काल से संबद्ध है।
- पुरापाषाण काल में आग का आविष्कार हुआ जबकि नवपाषाण काल में पहिए का विकास हुआ।
- इस युग की दो (विश्वव्यापी) विशेषताएं हैं—नए चकमक उद्योग की स्थापना तथा आधुनिक प्रारूप के मानव (होमोसेपिएन्स) का उदय।
- इस काल के मानवों की गुफाएं भीमबेटका से मिली हैं, जिनमें विभिन्न कालों की चित्रकारी देखने को मिलती है।
- उच्च पुरापाषाण कालीन चित्रों में भैंस, हाथी, बाघ, गैंडे तथा सूअर के चित्र प्रमुख हैं।
- भीमबेटका गुफा की खोज 1958 में बी. एस. वाकणकर ने की थी।
- उच्च पुरापाषाण काल में अस्थि उपकरणों का प्रयोग महत्वपूर्ण था। आंध्र प्रदेश के वेटमचर्ला से अनेक अस्थि उपकरण मिले हैं।
- मध्य पाषाण काल में पाषाण के लघु उपकरण बनाये जाते थे।
- भारत में सबसे पहले लघु पाषाण उपकरण 1867 ई. में विंध्य क्षेत्र में सी. एल. कार्लाइल द्वारा खोजा गया।
- प्रमुख मध्यपाषाणकालीन उपकरण हैं—इकधर, फलक, वेधनी, अर्द्धचन्द्राकार, समलंब इत्यादि।
- मध्यपाषाण काल में प्रक्षेपास्त्र तकनीक का विकास हुआ जिससे तीर-कमान का प्रचलन आरंभ हुआ।
- स्थायी निवास की अवधारणा नवपाषाण काल में आई तथा मानव ने 'कुत्ते' को सर्वप्रथम पालतू बनाया।
- इस काल के लोग पॉलिशदार पत्थर के औजारों और हथियारों का प्रयोग करते थे।
- नवपाषाण काल की प्रमुख विशेषताएं थीं—कृषि का आरंभ, गर्त-आवास (बुर्जहोम), मानव शव के साथ कुत्ता दफनाना, बड़ी मात्रा में अस्थि के औजार, पोत-निर्माण, ऊन के साक्ष्य, स्थायी जीवन एवं समाज का निर्माण।
- ताम्रपाषाण काल: मुख्यत: ग्रामीण संस्कृति थी। इसे कृषक संस्कृति, पशुचारिक संस्कृति एवं क्षेत्रीय संस्कृति भी कहा जाता है।
- ताम्रपाषाण कालीन लोग तांबे और पाषाण (पत्थर) का साथ-साथ प्रयोग करते थे। यह भारत में कई संस्कृतियों का आधार बना।
- दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान की संस्कृति को अहाड़ संस्कृति कहा जाता है। अहाड़ का प्राचीन नाम ताम्बवती था।
- नवदाटोली, एरण और नागदा मालवा संस्कृति के मुख्य स्थल हैं। नवदाटोली का उत्खनन कार्य प्रो. एच.डी. सांकलिया ने करवाया।
- ताम्रपाषाण काल के लोग मातृदेवी की पूजा करते थे। वृषभ धार्मिक सम्प्रदाय का प्रतीक था।
- ताम्रपाषाण काल के लोग लाल मृद्भाण्डों का प्रयोग करते थे तथा अग्नि-पूजा का प्रचलन था।
- लौह काल का निर्धारण सामान्यत: 1000 ई. पू. से 600 ई.पू. के बीच किया जाता है।
- उत्तर भारत में लौह काल के साथ-साथ चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (पी.जी.डब्ल्यू.) संस्कृति कायम हुई।
- दक्षिण भारत में लौह काल महापाषाण संस्कृति के समकालीन था।